प्रफुल्ल कोलख्यान

दिशाएँ विश्राम में हैं

दादी की कहानियों की सारी बच्चियाँ बूढ़ी हो गई हैं
दिशाएँ उनकी झुर्रियों में अनंत विश्राम में हैं
अभी भी रोज उगता है सूरज जैसे कि चटकते हैं फूल
बस जरा-सा सहमकर : बस जरा सहमकर

सब दिशाएँ विश्राम में हैं --
जीवन जितना कठिन कभी नहीं जंगल थे,
पहाड़ थे जंगली जानवर थे, पथरीले दिल थे
अँधेरी रात थी, तो उजले दिन भी थे
बूढ़े थे, कमसिन थे जीवन के दिन थे
कठिन न थे सूरज, तय समय पर उगता था विचार
लोग नमस्कार करते थे सूरज तय समय पर डूबता था

लोग नमस्कार करते थे
सूरज कभी किसी की निजी जिंदगी में
दखल नहीं देता था और चाँद भी
जीवन के ही प्रयोजन से दमकता था उपमा बनकर
आता था सूरज रंगों की छतरी खोलने तक बना रहता था
अँधेरा था जो डराता भी था
डर से बचाव के लिए ओट का भी काम करता था
दिशाएँ अनंत की ओर दौड़ती थी बाग में बच्ची बनकर
कहते हैं निराला बोलता था `झींगुर', जरा डटकर

दादी की कहानियों की सारी बच्चियाँ बूढ़ी हो गई हैं
दिशाएँ उनकी झुर्रियों में अनंत विश्राम में हैं
अभी भी रोज उगता है सूरज जैसे कि चटकते हैं फूल
बस जरा-सा सहमकर : बस जरा सहमकर
सो गई ‘अमीना’ चुपके से ‘हामिद’ के कान में कहकर --
-- सो जा, कि दिशाएँ विश्राम में हैं।